शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यरूप

महान व्यक्तित्व

6

बेसिक काव्य सृजन

काव्य निर्माण

रजत कमल वार्ष्णेय (स०अ०)

प्रा० वि० खंजनपुर

इस्लामनगर, बदायूँ

आओ हाथ से हाथ मिलाएँ, बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ।

#9458278429

श्री रामचन्द्र

दशरथ पुत्र राम हुए,
अयोध्या में आनन्द भये।
थे तेजस्वी राम प्रभु,
ऐसे प्रभु श्रीराम भये।।

कौशल्या के थे प्यारे राम,
कैकेयी, सुमित्रा के प्यारे राम।
राजा दशरथ को थे प्यारे राम,
भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न को प्यारे राम।।

१४ वर्ष को वनवास भये,
जाकर दानव संहार किए।
रहे तपस्वी बनकर सब,
राम-लखन सीता संग गये।।

जब क्रूर रावण ने माँ सीता को,
छलवश साधू रूप धारण करके।
उनकी कुटिया से उनको हरण करके,
ले गया साथ स्वर्ण नगरी में माँ सीता को।।

घोर पाप किया शक्ति घमण्ड में,
हो गया काल का भक्षक वो भी।
सम्पूर्ण जग को जीता था जिसने,
था काल भी जिसके खुद अपने वश में।।

तब जाकर प्रभु श्रीराम ने रावण को,
पापों का फल दिया उस रावण को।
शक्ति घमंड में चूर पापी रावण से सबको,
कर प्राण मुक्त दिया अधर्मी उस रावण को।।

महर्षि दधीचि

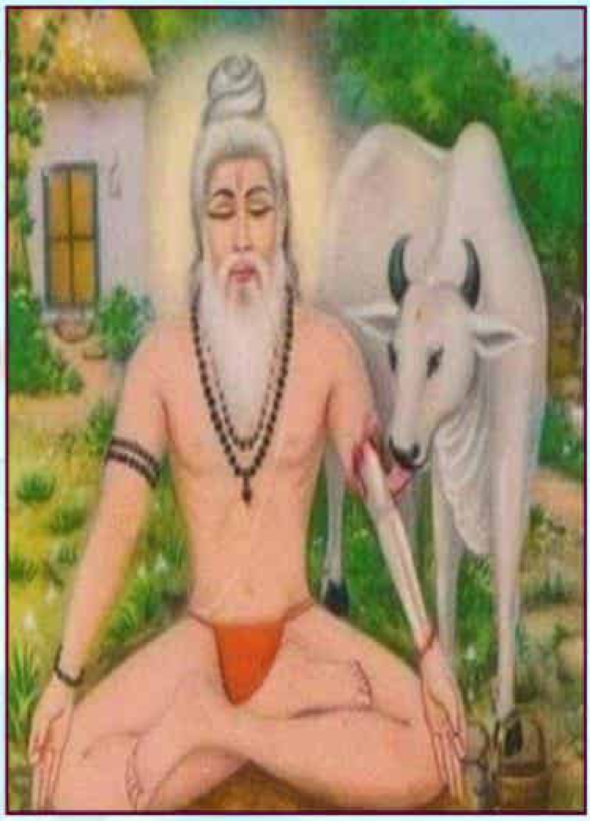

सीतापुर में नैमिशरण्य,
रहते दधीचि उस अरण्य।
तपोसाधना में लीन रहकर,
देवों के हितैषी रहे जीवन भर।।

एक बार जब देव-दानव आपस में,
भयानक संग्राम हुआ जब आपस में।
देवों के हारे जाने के डर से जब,
हुए इकट्ठे सब देव-इंद्र आपस में।।

दानव दल के संहार को जब ब्रह्मा ने,
एक उपाय सब देवों को बतलाया।
हुआ अचम्भा जानकर जब ये उपाय,
जाकर जब ऋषि दधीचि को बतलाया।।

देवों के इस उपाय को सुनकर ऋषि जब,
अत्यंत प्रसन्न और आनंदित हुए ऋषि तब।
कर दिए प्राण त्याग देवों की विजय को,
वज्रअस्त्र से वृत्रासुर को देवों ने मार दिया तब।।

दुष्यंत पुत्र भरत

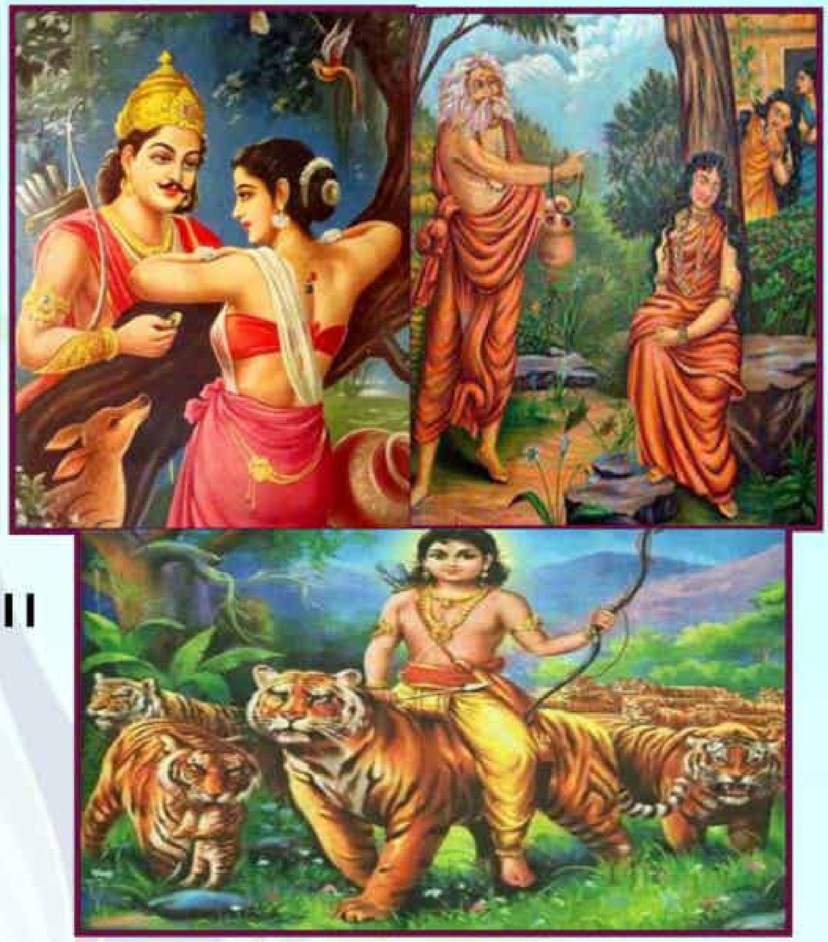

हस्तिनापुर राज्य के,
थे राजा दुष्यंत।
पुत्र थे उनके भरत,
साहसी,वीर अत्यंत।।

एक बार जब राजा थे,
भ्रमण करते वन में।
देखा सुंदर एक कन्या को,
भाव उठे उनके निज मन में।।

कण्व ऋषि के आश्रम में,
सुंदर कन्या थी शकुंतला।
कर गंधर्व विवाह राजा ने,
हुई जब उनकी शकुंतला।।

देकर अंगूठी जब राजा ने,
अपने राज्य प्रस्थान किया।
खोयी शकुंतला यादवश,
ऋषि दुर्वासा ने यह श्राप दिया।।

खोयी हो जिसकी यादवश,
भूल जाएगा वो तुमको भी।
सुनकर ऐसा श्राप को जब,
दिखा अंगूठी याद आएगा भी।।

कश्यप ऋषि के आश्रम में,
जब एक बालक का जन्म हुआ।
था अत्यंत साहसी वह बालक,
गिनता शेरों के दांत वह बालक।।

नाम था उस बालक का भरत,
जिससे देश का नाम हुआ।
जाकर देख उस बालक को,
राजा को पत्नी,बच्चे का बोध हुआ।।

सत्यवादी हरिशचंद्र

सत्यवादी,परमदानी,
राजा हरिशचंद्र दानी।
कर दिया समर्पण सब,
ना राज ना धन था अब।।

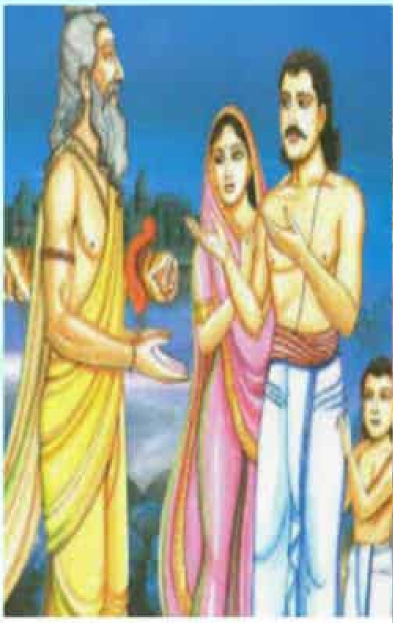

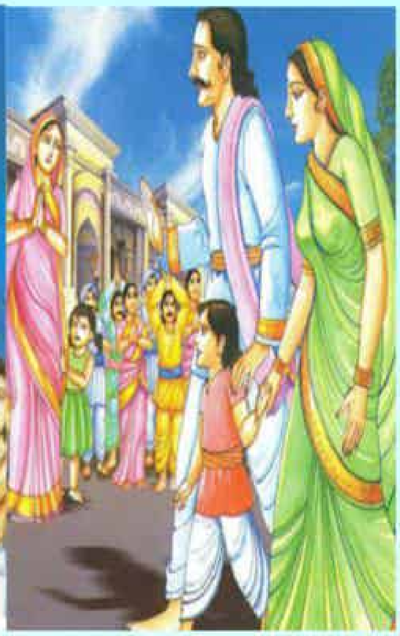

लेकर पत्नी और बेटा,
चले राज्य से दूर सभी।
जा पहुँचे एक क़ब्रिस्तान में,
मिला काम शवदाह का ही।।

पत्नी करने लगी काम घरों में,
बालक राहुल था अबोध ही।
पेट भरा करते सब मिलकर,
कैसा भाग्य लिखा उनका भी।।

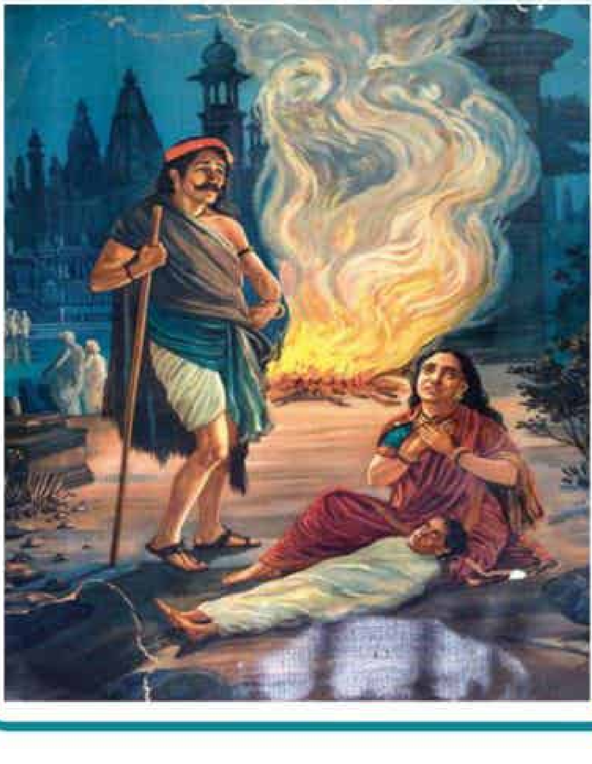

एक रोज़ हुआ ऐसा जो,
नियति टाल सके न कोई।
उस अबोध बालक की जान,
सांप के काटे बचा ना कोई।।

लेकर जा पहुँची क़ब्रिस्तान में,
अबोध बालक के शवदाह को भी।
माँग ली जब शवदाह की क़ीमत,
चीर काट कपड़े से उसने अदा की।।

यह देख विश्वामित्र हुए प्रसन्न जब,
हुए प्रकट वहाँ देखकर ये दान तब।
दिया वरदान उन्हें प्रसन्न होकर जब,
मिला सब राज काज जैसा था सब।।

महर्षि वेदव्यास

परमज्ञानी,
वेदों के थे विद्वानी।
चार वेद लिखे निज वानी,
कहलाए वेदव्यास ज्ञानी।।

महाभारत,
महाकाव्य रचनाकार।
अठारह पर्व महाकाव्य समाहित,
जिसमें हज़ारों श्लोक समाहित।।

महाकाव्य,
लोक कल्याण को।
लिखा मिलकर हस्त गजानन को,
ना रुकी लेखनी लिखे काव्य को।।

महर्षि सुपंच सुदर्शन,
उसी काल हुए इनके भी दर्शन।
आश्रम इनका इटावा में पंचनदा टीले पर,
कृष्ण भक्त थे महर्षि निज जीवन भर।।

गुरु गोरखनाथ

समाज सुधारक,
नैतिक जीवन प्रेरणा कारक।
नाथ सम्प्रदाय,साहित्य प्रचारक,
निज विचार,आदर्श प्रचारक।।

संतोष,अहिंसा,
जीव दया मूल मंत्र थे उनके।
बौद्ध,शैव और शाक्त संप्रदाय,
धर्म सुलभ बनाया सबके।।

प्रादुर्भाव हुआ कब?
जालंधर,पंजाब जन्मक्षेत्र में।
अधिकांश विद्वानों के मत में,
गोरखनाथ मंदिर गोरखपुर में।।

नेपाल के गोरखा ज़िले में,
एक गुफा में पग चिन्ह मिले है जिनके।
वैशाख पूर्णिमा को मनाते,
रोट महोत्सव सब जन इसके।।

एकलव्य

राजा हिरण्य धनु निषाद पुत्र,
एकलव्य जिसका था सुपुत्र।
द्रोणाचार्य के प्रति लगन,
धनुर्विद्या में रहता था मगन।।

एक बार जब द्रोण ने वन में,
गुरु को देखा सिखाते वन में।
हुआ आनंद देखकर उनको जब,
पहुँच गए सीखने स्वयं वहाँ तब।।

द्रोण सिखा रहे राजकुमार को,
धनुर्विद्या में करते दक्ष सबको।
राजकुल की मर्यादा के विरुद्ध,
जब मना किया गुरु ने उनको।।

तब जाकर एकलव्य ने एक,
प्रतिमा को गुरु रूप दे डाला।
उनके सम्मुख किया प्रणाम,
फिर धनुर्विद्या को सीख डाला।।

हुए अचंभित देखकर ये सब,
जब गुरु द्रोण को मालूम हुआ।
माँग लिया उनसे गुरु-दक्षिणा,
काट अंगुष्ठ जब अलग हुआ।।

चिकित्सक शुश्रुत भाग - 1

परम ज्ञानी,आयुर्वेद विज्ञानी।
चिकित्सा अनुसंधान,थे विज्ञानी।
शल्य चिकित्सा का अविष्कार,
किया जिन्होंने अद्भुत परोपकार।।

एक बार जब रात्रि समय में,
एक राहीगार आ पहुँचा मिलने।
था कराह रहा ज़ोर से चोट दर्द में,
कर दिया उपचार उसका उन्होंने।।

उसका शल्य उपचार किया,
औषधि से उपचार किया।
शल्य चिकित्सा नाम दिया,
प्लास्टिक सर्जरी नाम किया।।

तब औजार और दवाई भी,
उपचार मात्र को ना होते थे।
फिर भी आयुर्वेद चिकित्सा से,
उपचार उस समय होते थे।।

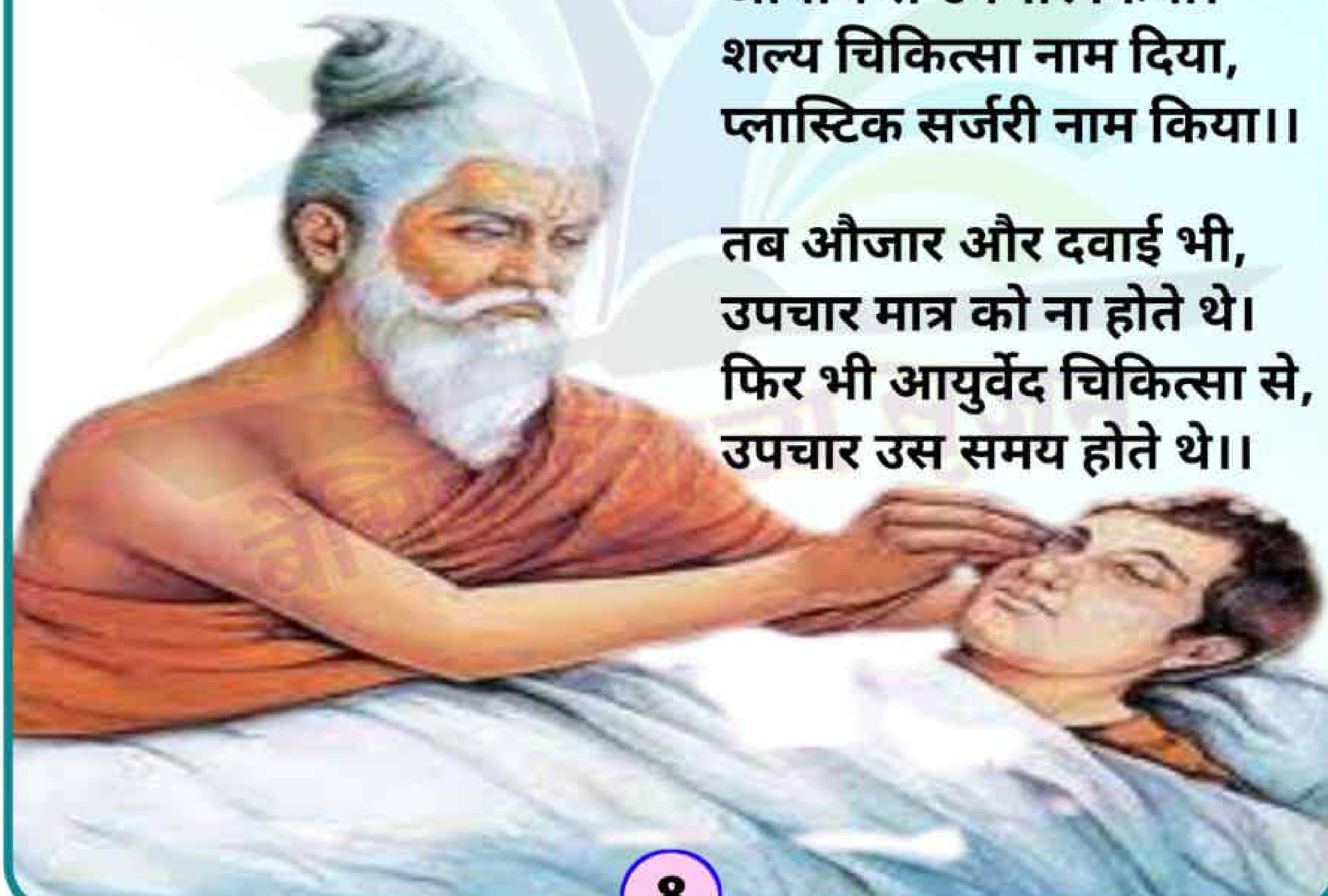

चरक भाग - 2

अनुसंधानी, चिकित्सक वो।
औषधि,दवाईयों का, ज्ञान था जिनको।।

आयुर्वेद चिकित्सा में, उपचार होता जब।
औषधियों से उपचार, हो जाता था तब।।

नाम से जिनके प्रसिद्ध, थी चिकित्सा पद्धति।
नाम से जिनके प्रसिद्ध, चरक संहिता पद्धति।।

था उनको ज्ञान जिनको, आनुवंशिकी और दवाइयों में भी।
कहते उनको सभी जनमानस, आनुवंशिकी का जनक भी।।

भारत के महान खगोलविद भाग - 1

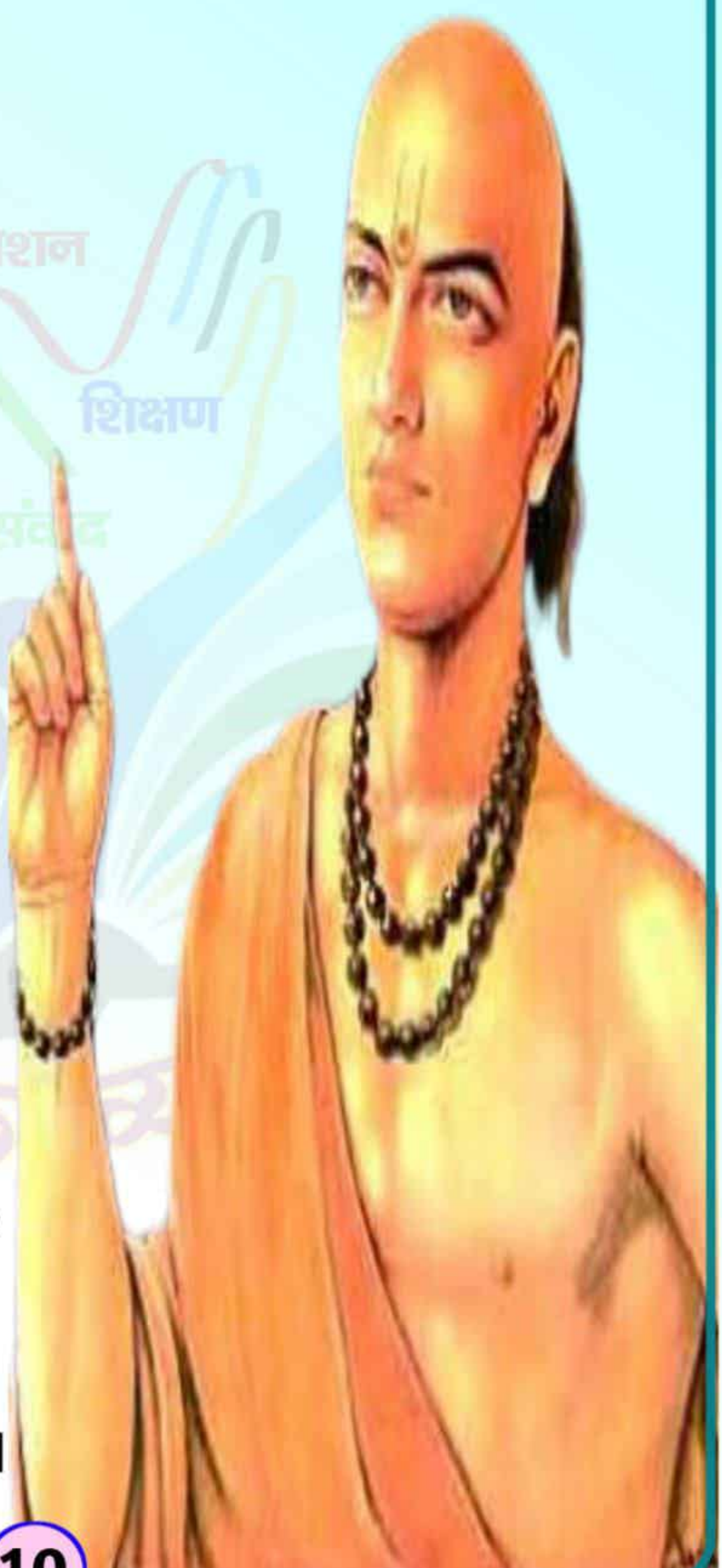

खगोल विज्ञान,
का अद्भुत ज्ञान।
नाम थे जिसकी,
अनेकों पहचान।।

सबसे पहले यह जाना,
दुनिया ने यह सब माना।
पृथ्वी घूमे अपनी धुरी पर,
होता दिन-रात तब माना।।

सूर्य चमकता है,
अनंत काल से।
चंद्र चमकता है,
जिसके प्रकाश से।।

लिखी उन्होंने किताब जब,
नाम रखा आर्यभट्टीय तब।
सन १९७५ को भारत ने,
आर्यभट्ट उपग्रह नाम तब।।

वारहमिहिर (भाग - 2)

ज्योतिषी और खगोलविज्ञानी,
आर्यभट्ट समान थे परमज्ञानी।
कर दी घोषणा अपनी ज्योतिष से,
मर गया राजकुमार इस घोषणा से।।

हुआ अचम्भा जब सत्य हुआ सब,
आ पहुँचे मिहिर राजदरबार में तब।
दुःखी राजा ने उनके इस ज्योतिष को,
वराह सम्मान से नवाज़ा ज्योतिषी को।।

नाम पड़ गया वराहमिहिर उनका,
आर्यभट्ट का प्रभाव था जिन पर।
ज्योतिष और खगोल विज्ञान का,
परम ज्ञान और प्रभाव था जिन पर।।

मान लिया जिसने अद्भुत शक्ति को,
वस्तुयें चिपकी रहती ज़मीन से क्यों?
पौधे,दीमक इंगित करते इस बात को,
ज़मीन के नीचे पानी होता है क्यों?

सवाई जय सिंह (भाग - 3)

आकाश के तारे,
बचपन से प्यारे।
पूछा बेटी ने उनसे,
कितनी दूर हैं तारे।।

इस बात से हुए तब,
राजा बहुत प्रभावित।
मन ही मन ठान लिया,
खोज करेंगे इसकी अब।

राजा मान सिंह ने जब,
१३ वर्ष की छोटी उम्र में।
आमेर की राज गद्दी पर,
राज किया छोटी उम्र में।।

मराठों को हराया जब,
औरंगज़ेब ने नाम दिया।
राजा को उपाधि मिली,
सवाई जय सिंह नाम दिया।।

वेधशाला में दूरबीन से,
पता लगे दूर तारों का।
नाम रखा जंतर मंतर,
कर दिया अनोखा प्रयोग था।।

महात्मा बुद्ध

नेपाल की तराई में,
थे एक राजा शुद्धोधन।
राजधानी जिसकी कपिलवस्तु,
राज्य में था सुख-समृद्धि और धन।।

राजा के थे एक पुत्र,
नाम था जिनका सिद्धार्थ।
माँ बचपन में स्वर्ग सिधारीं,
मौसी गौतमी ने जिंदगी संवारी।।

राजसुख से वैराग्य हुआ,
रात्रि समय प्रस्थान हुआ।
सत्य की खोज में निकल गए,
पत्नी और बच्चे को महल छोड़ गए।।

तब जाकर महात्मा बुद्ध कहलाए,
बरगद वृक्ष के नीचे प्रवचन सुनाए।
सांसारिक सुख को त्याग कर,
दीन दु:खी को सहारा बनना सिखलाए।।

विश्व भ्रमण करके सब जन को,
देखा दु:खी निज मानस मन को।
तब जाकर सत्य का ज्ञान हुआ,
नाम भी उनका महात्मा बुद्ध हुआ।।

महान अशोक

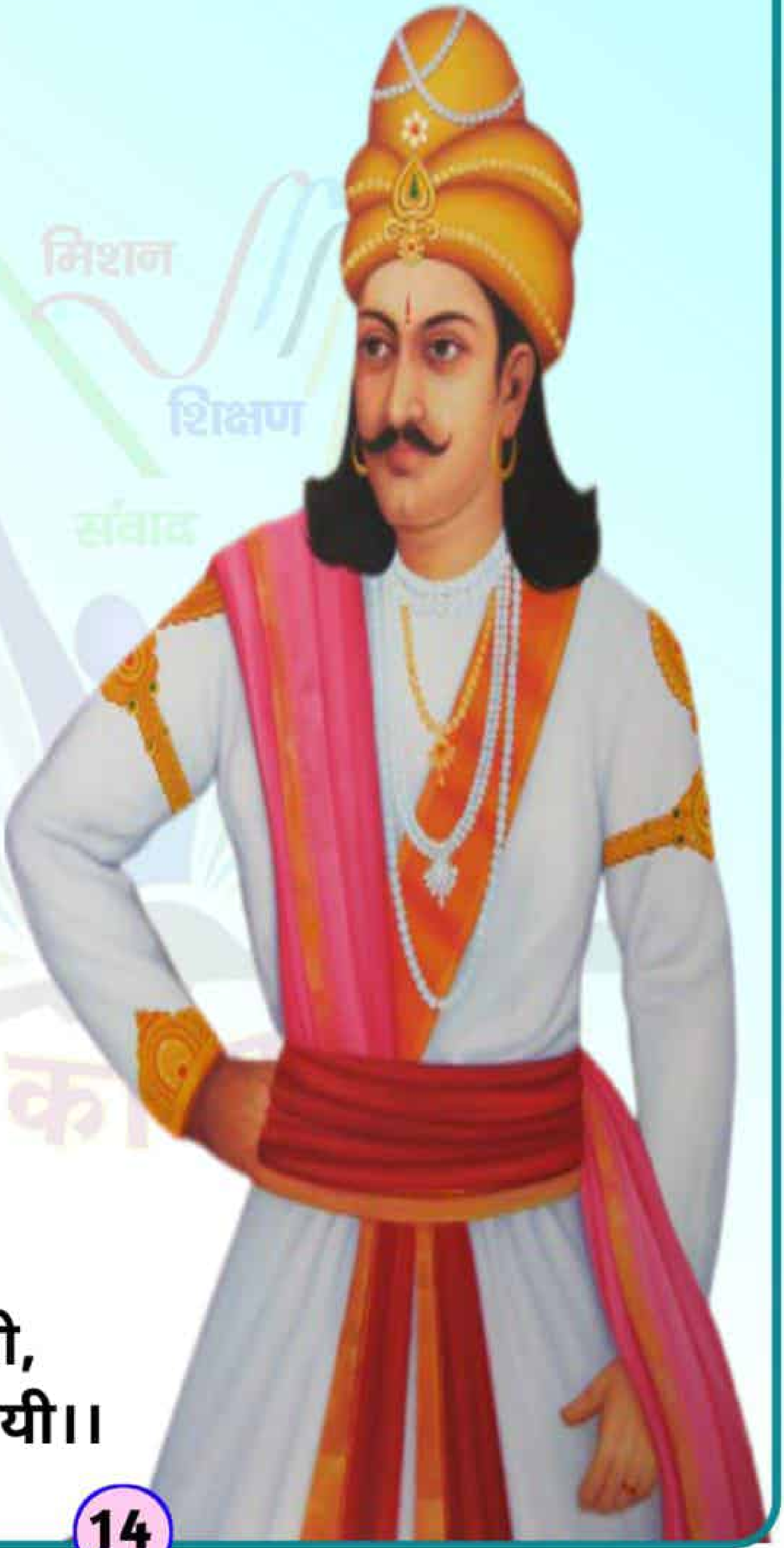

अशोक महान,
था बलवान।
कलिंग जीत,
हुआ भयभीत।।

देख प्रजा को,
रोता-बिलखता।
हुआ निशब्द,
सब प्रजा देख।।

किया प्रण,
ना होगा अब।
नरसंहारक युद्ध,
ना होगा अब।।

छोड़कर तलवार,
किया धर्म-प्रचार।
बौद्ध धर्म का अनुयायी,
बुद्ध के उपदेश अनुयायी।।

चंद्रगुप्त विक्रमादित्य

चंद्रगुप्त थे धर्म अनुयायी,
दान-धर्म की रीति चलायी।
कला-संस्कृति में निपुण थे,
बहुविधाओं के धनी राजा थे।।

धर्म-संस्कृति खूब फला फूला,
सबका धर्म-संस्कृति क़बूला।
दक्षिण तक राज्य फैलाने को,
वैवाहिक सम्बंधों का जाल फैला।।

सुयोग्य और सशक्त शासन से,
विक्रमादित्य की उपाधि मिली।
दरबार में थे इनके नवरत्न सभी,
कालिदास को सर्वोच्च पहचान मिली।।

कला और संस्कृति खूब फले,
प्रजा को यश और सम्मान मिले।
इसीलिए स्वर्ण युग कहलाये,
गुप्त वंश के सर्वोच्च राजा कहलाये।।

आल्हा ऊदल

सुनो सुनाएँ एक कहानी,
आल्हा और ऊदल की।
दोनों भाई वीर पराक्रमी,
वीरगाथा उनके पौरुष की।।

हुआ ऐसा जब आल्हा ऊदल,
पहुँचे जंगल में शिकार करने।
पूरा दिन यूहीं बीत गया जब,
ना मिल सका शिकार जंगल में।।

आल्हा ने भाई ऊदल को जब,
यह कहकर समझाया उसको।
आ अब लौट चलें वापस घर को,
ना मिला शिकार जब उनको।।

भाई ऊदल ने जब कहा आल्हा से,
है नहीं बात ये वीरता और पौरुष की।
जब तक शिकार नहीं मिलेगा मुझको,
ना लौटूँगा मैं घर को वापस भी।।

चलते चलते जा पहुँचा जब ,
दूसरे राज्य की सीमा के अंदर।
वंरक्षकों ने तब ले जाने ना दिया,
ऊदल को उसका शिकार तब।।

जब राजा माहिल ने भेजा पुत्र को,
जा लड़ा द्वन्द युद्ध तब ऊदल से वह।
हार गया जब वह आया वापस महल में,
हो गया आग बबूला देखा राजा ने ये सब।।

जा पहुँचा रणक्षेत्र में ऊदल से बदला लेने,
बता दिया उसके पिता का हत्यारा तब।
भाई और चाचा के साथ जब ऊदल ने,
कलिंगराय को युद्ध में परास्त किया तब।।

राजेंद्र चोल

चोल वंश के शासक,
शक्तिशाली और कुशल।
राजाराज के पुत्र राजेंद्र,
थे चालक और चपल।।

दक्षिण भारत पर राज किया,
व्यापार का विस्तार किया।
दक्षिण से लेकर पूर्वी एशिया तक,
लंका से लेकर दक्षिण पूर्वी एशिया तक।।

शासन करने का अद्भुत कौशल था,
साम्राज्य को बाँटा टुकड़ों में था।
हर टुकड़ा मंडलम कहलाता था,
हर मंडलम में वालानाडू होता था।।

हर वालनाडू में निश्चित गाँव होते,
शासन करने को ग्राम सभा होती।
व्यापारी समूह में व्यापार करते,
समूहों में एक तरह के व्यापारी होते।।

व्यापार समूह व्यापार मंडल कहलाते,
धन पूँजी इकट्ठा होकर बैंक बन जाते।
जमा पूँजी से सब लोग व्यापार बढ़ाते,
गाँव-गाँव व्यापार समूह मिल जाते।।

महाराजा सुहेलदेव

उत्तर प्रदेश के बहराइच जिले में,
बाबागंज स्टेशन से कुछ दूरी पर।
माना जाता है बहुत समय पूर्व,
राजा सुहेलदेव ने राज किया यहाँ पर।।

जब महमूद गजनवी ने पंजाब प्रांत से,
बहराइच की सीमा तक अधिकार जमाया।
तब राजा सुहेलदेव ने सेना संगठित कर,
नवासा मसूद सालार को तब मार भगाया।।

सैयद मसूद सालार गाजी को शहीद कर,
पूरे भारत में यश-सम्मान को पाया।
चित्तौरा झील के निकट जहाँ पर,
शहीद सालार की उस जगह पर मंदिर बनवाया।।

निज़ामुद्दीन औलिया

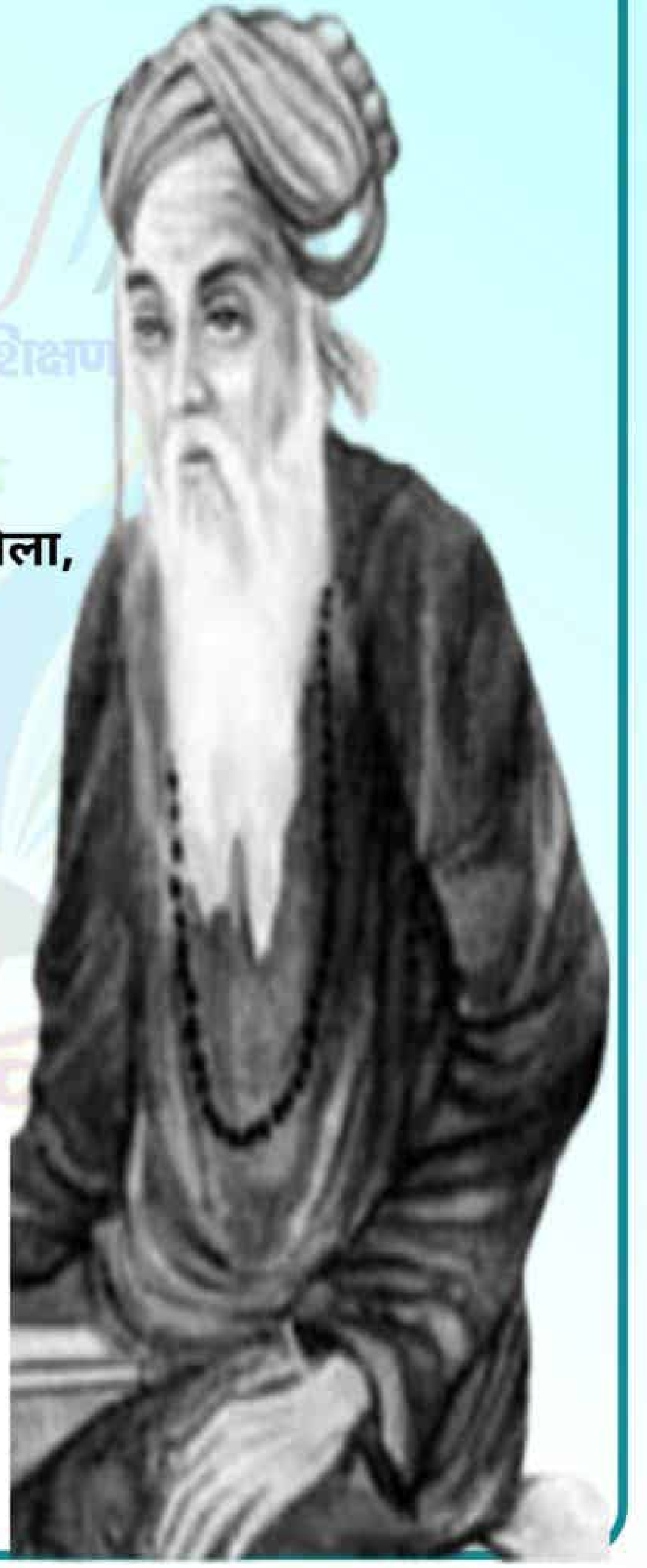

बदायूँ में उनका जन्म हुआ,
नाम निज़ामुद्दीन औलिया हुआ।
पालन पोषण जुलैखा ने किया,
जा दिल्ली आध्यात्मिक ज्ञान हुआ।।

शेख़ फ़रीदुद्दीन का सानिध्य मिला,
आध्यात्मिक ज्ञान का बोध हुआ।
बाबा फ़रीद से करुणा- दया का पाठ मिला,
तब जाकर ग़रीबों का रखवाला हुआ।

दिल्ली आकर शेख़ निज़ामुद्दीन ने,
गयासुर मठ का निर्माण किया।
तीर्थस्थल बन गया ग़यासुर मठ,
सब जन का आदर भाव किया।।

ग़रीबों के परती करुणा रखते थे,
उनको उपहार दान भैंट कर देते थे।
कव्वाल खानकाह में आते रहते थे,
लंगर को मठ के द्वार खुले रहते थे।।

कबीर भाग -1

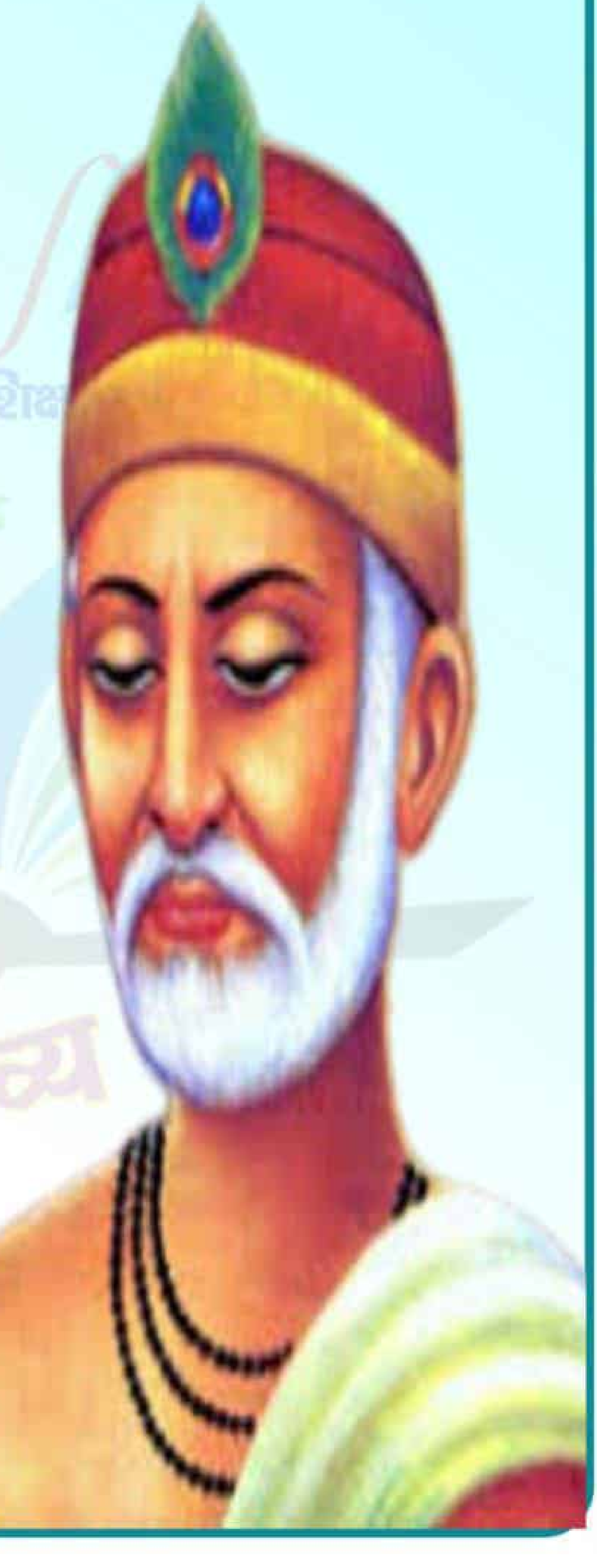

कबीर,
थे फ़क़ीर।
किताबों से दूर,
ज्ञान का अद्भुत भंडार।।

हिंदू-मुस्लिम,
भेदभाव से दूर।
माना उसने सबको एक,
ईश्वर एक,सब जन एक।।

सिधुक्कड़ी,
सब जन की भाषा एक।
लिखा जब प्रेम भाव को,
सब जग में फैली कुरीतियों को।।

मानव जा संसार में,
सब मिट्टी की देह।
खाय-कमाय जीवन भर,
ना हो सकी जे अपनी देह।।

गुरु रामानन्द भाग -2

थे अद्भुत बुद्धि के बालक,
भक्ति का मतवाला बालक।
छुआछूत और आडम्बर से,
कोसों दूर था यह बालक।।

नाम था उनका रामानन्द,
राम की भक्ति का आनंद।
छोड़ दिया घर-परिवार सभी,
घूमें सब जग आनंद-आनंद।।

लौट पड़े वह आश्रम को तब,
गुरु राघवानंद ने त्याग किया।
छुआछूत से घृणा हुई उनको तब,
भक्ति मार्ग को नया जन्म दिया।।

जीवन भर प्रभु की भक्ति में,
लीन रहे प्रभु राम की भक्ति में।
जन्म हुआ रूढ़िवादी भक्ति का,
जन्म हुआ प्रगतिवादी भक्ति का।।

संत रविदास

हुए गुरु संत रामानन्द,
था भक्ति का आनंद।
मधुर आचरण और श्रम,
जीवन के थे उनके कर्म।।

नाम था उनका संत रविदास,
रगघ पिता थे, घूरिबिनिया माता।
चर्म का व्यवसाय का उनका,
पर उनको संत समाज था भाता।।

राम, रहीम, ईश्वर, अल्लाह सब,
नाम एक प्रभु के हैं सब के सब।
भक्ति करना अलग हो सकता है,
ईश्वर ना सबका होता अलग है।।

ईश्वर भजन मन को थे भाते,
देख कुरीतियाँ बिलख हो जाते।
समाज जोड़ने का काम वो करते,
संतों के संग प्रभु भक्ति वो करते।।

शेरशाह सूरी

नाम फ़रीद, सहसराम के वासी,
थे पिता हसन खाँ, थी जागीरदारी।
पिता थे चार पत्नियों के स्वामी,
छोटी पत्नी फ़रीद संग करती मनमानी।

छोड़कर परिवार फ़रीद पहुँच गए जौनपुर,
अरबी, फ़ारसी, इतिहास, दर्शन का अध्ययन कर।
फिर सीखी जागीरी पिता के साथ में रहकर,
करने लगे नौकरी बिहार के सुल्तान के साथ रहकर।

एक बार जब फ़रीद ने राजा को शेर से बचाया,
तब उन्होंने शेरखाँ सा अपना नाम कमाया।
शेरशाह की कुशलता से मुग़ल भी चौकन्ने थे,
था उनको भी यह यक़ीन शेरखाँ भी चौकन्ने थे।

शेरशाह ने चाँदी सोने और ताँबे के सिक्कों को,
कर दिया व्यापार में मान्य इन सब सिक्कों को।
सिंध से बंगाल के सोनार तक ग्रांड ट्रंक रोड,
आवाजाही का था सुंदर और एक अद्भुत रोड।

चाँदबीबी

अहमदनगर के निज़ामशाह की बेटी,
पति की मौत के बाद गद्दी पर बैठी।
जा पहुँचीं भाई के पास अहमदनगर,
ना मालूम था शांति से हो गुजर-बसर।

कर दी गयी हत्या भाई इब्राहिम की,
हो गयी साम्राज्य में अशान्ति पैदा सी।
दरबार में अमीरों और सरदारों में हुई लड़ाई,
पर अहमदनगर की राजगद्दी ना मिल पाई।

मुग़ल शासक ने दक्षिण भारत पर धौंस जमा ली,
ना कर सके अहमदनगर को फिर घेरा वहाँ डाली।
ना कर सके सामना चाँदबीबी के युद्ध कौशल का,
हो गयी संधि साथ में हुआ बरार अब मुग़लों का।

पाँच वर्ष बाद मुग़लों ने फिर किया आक्रमण,
अहमदनगर ने कर दिया इस बार समर्पण।
मुग़लों ने चाँदबीबी के हत्यारों का पता लगवाया,
फिर जाकर उनको प्राणदंड सबको दिलवाया।

नानक देव

गुरु नानक देव,
मानवता के उपासक।
भजन कीर्तन मनभावक,
दुखियों का साथ अतिभावक।।

पढ़ने में मन लगता नहीं,
मानवता ही जिनका धर्म।
व्यापार, नौकरी मन को ना भाता,
मन को भाता भजन कीर्तन।।

बहन नानकी को लगता,
करेगा वीर कुछ नाम बड़ा सा।
सब जन को लगता वह कोई,
जैसे हो कोई सिद्ध पुरुष सा।।

घूम-घूम कर देश-विदेश,
मानवता का संदेश दिया।
अफ़ग़ान, काबुल विदेश,
दुखियों का साथ दिया।।

तलवण्डी नाम की जगह,
बनी भक्तों की आस्था की वजह।
शिष्यों ने नाम किया जब,
ननकाना साहिब नाम अब।।

महाराणा प्रताप

अद्भुत शौर्य,अदम्य साहस,
ऐसा था उसका शासन।
नाम था उनका महाराणा प्रताप,
बल- बुद्धि का अनोखा राजन।।

उदयपुर में जन्म लिया उसने,
मुग़लों की नाक में दम कर दिया।
जब तक ज़िंदा धरती पर उसने,
मेवाड़ राज्य का सर झुकने ना दिया।।

मुग़लों की भारी सेना से जब,
चतुराई से दो दो हाथ किए।
हल्दीघाटी के युद्ध में जब,
मुग़लों के मँसूबे चकनाचूर किए।।

चेतक और सरदार झाला ने,
मरते दम तक राणा का साथ दिया।
दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिए दोनों ने,
राणा का शीश कटने ना दिया।।

अहिल्याबाई

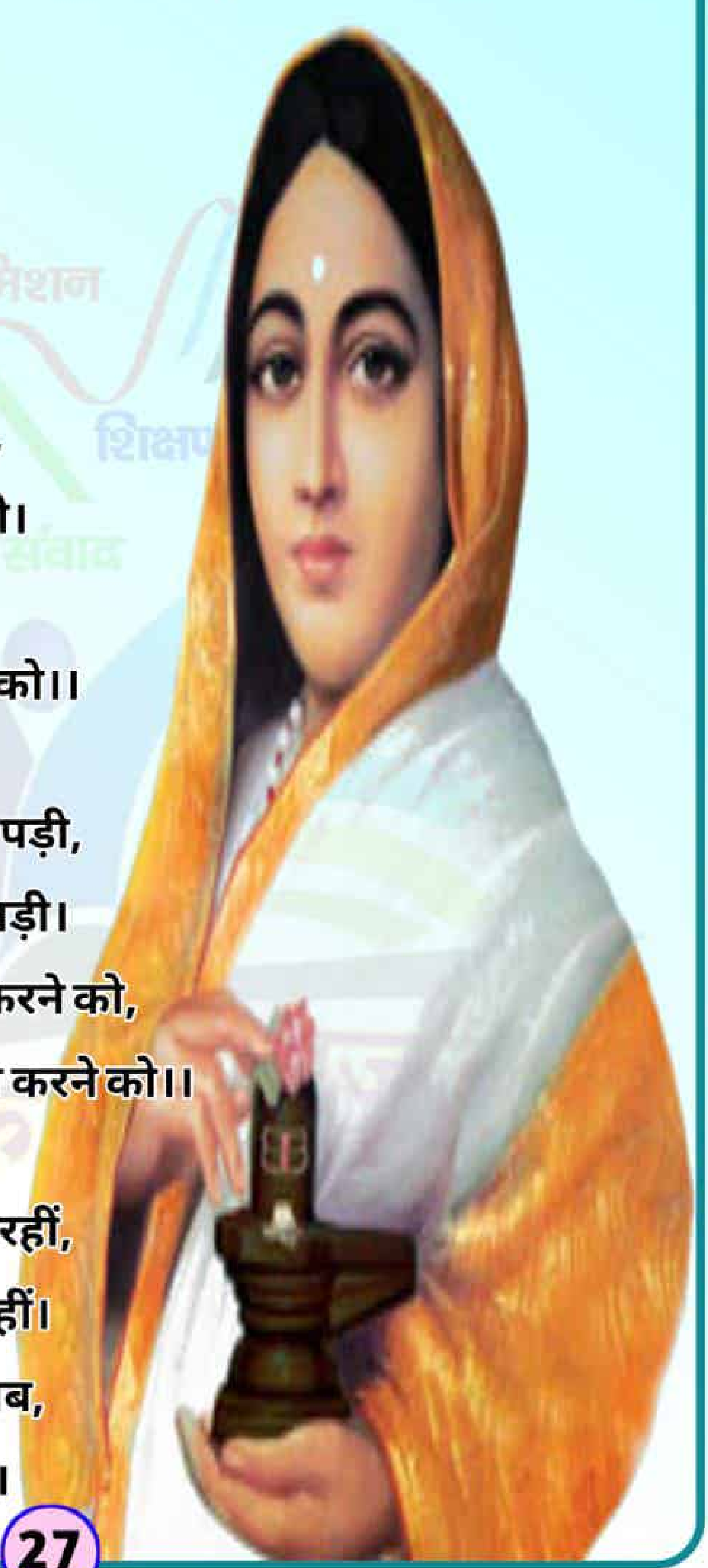

थी पुजारिन और साहसी,
करतीं पूजा मंत्रमुग्ध सी।
हुआ एक दिन ध्यान होल्कर को,
दिया निमंत्रण परिणय बंधन को।।

विवाह हो गया खांडेराव होल्कर से,
राजकाज और शस्त्र ना भाते उनको।
तब जाकर प्रेरित किया उन्होंने,
हो गया तैयार रणक्षेत्र में युद्ध करने को।।

वीरगति होने पर कैसी विपदा आन पड़ी,
अहिल्याबाई राज करने को आन खड़ी।
बालाजीराव ने विरोध किया ऐसा करने को,
किया सचेत राज्य मिला कर अपना करने को।।

अहिल्याबाई अपने साहस से खड़ी रहीं,
देख उन्हें दुश्मन की सेना ना खड़ी रहीं।
अहिल्याबाई को मां साहब कहते सब,
इतिहास में लिखीं वीरगाथाएँ सब।।

महाराजा रणजीत सिंह

पंजाब प्रांत के शासक,
धीर, वीर, गम्भीर शासक।
शेर-ए-पंजाब की उपाधि,
अंग्रेजों के सर की व्याधि।।

शरीर से दुर्बल और कुरूप,
साहस के अनेक प्रतिरूप।
राजधानी लाहौर बनायी,
क़वायद प्रथा सेना में अपनायी।।

दानवीर और धनी थे,
वचनबद्ध और शील थे।
नाम था रणजीत सिंह,
साहस अदम्य जैसे सिंह।।

एक बार जब एक मुसलमान,
बेच रहा अमूल्य लिखी क़ुरान।
ना मिला उसको कोई धनवान,
आ पहुँचा उनके ही दरबान।।

देख क़ुरान को लगा मस्तक से,
जो चाहो देगा महाराजा रणजीत सिंह।
जो माँग सका राजा से मुसलमान,
ऐसे दानवीर थे महाराजा रणजीत सिंह।।

मंगल पांडे

शील, स्वाभिमानी,
अमर बलिदानी।
मंगल पांडे अमर,
कट्टर हिंदुस्तानी।।

अंग्रेज़ी हुकूमत में,
सेना के बने सिपाही।
ईस्ट इंडिया कंपनी में,
मंगल पांडे बने सिपाही।।

उन दिनों एक बात चली,
गाय की चर्बी से बने कारतूस।
विद्रोह की एक लहर चली,
अंग्रेजों की थी एक सियासत।।

पूरे उत्तर भारत में फैली जब,
विद्रोह की यह जलती चिंगारी।
ना रोक सका इस आंधी को,
जब जल उठी स्वतंत्रता चिंगारी।।

बैरकपुर में जब ना हुआ कोई,
देने को फाँसी मंगल पांडे को।
तब बुलवाया बंगाल से फाँसी को,
हो गए अमर बलिदानी देश को।।

कुंवर सिंह

वीर,साहसी और देशभक्त,
युद्ध रणनीति में थे सशक्त।
नाम था उनका कुँवर सिंह,
स्वतंत्रता को थे आशक्त।।

अंग्रेज़ों के छक्के छूटे,
उनकी बलबुद्धि से।
भारत को अपना कर ले,
अंग्रेजों के सपने टूटे।।

बदली रणनीति, कौशल से,
दुश्मन सेना को निर्बल कर देते।
अंग्रेजों को हर बार पछाड़ कर,
उनके सपनों को पानी कर देते।।

थे उम्र में ज़्यादा तो क्या था?
साहस और बल टूटा कहाँ था?
हर बार रणनीति क्या होगी?
ऐसा अंग्रेज़ों को पता कहाँ था?

शिवपुरी घाट से गंगा पार करते,
रात्रि समय अंग्रेजों ने गोली चला दी।
कुँवर सिंह ना झुके फिर भी आख़िर,
मरते दम तक कुँवर सिंह ने जान लगा दी।।

बाबू बंधु सिंह

जन्म हुआ जागीर परिवार में,
गोरखपुर की डूमरी रियासत में।
बचपन से बस एक ललक थी,
अंग्रेज़ों से स्वतंत्रता मिलने की।।

देवी भक्त थे बाबू बंधु सिंह वह,
करते देवी आराधना देशभक्त वह।
अंग्रेज़ों से ना डरते थे वीर वह,
अंग्रेजों की कड़ी परीक्षा थे वह।।

एक बार अंग्रेजों ने सोना भेज,
की गलती बहुत बड़ी अब एक।
ना बचा कोई उनके दम से,
हर कोई मरा अंग्रेज़,ना बचा एक।।

अंग्रेज़ों ने झल कपट से जब उनको,
ख़ुफ़िया मुखबिर द्वारा पकड़ा उनको।
कर दिया बंद जब बंदीग्रह में उनको,
दे दी फाँसी जब चौराहे पर उनको।।

किवदंतियाँ हैं बहुत सी उनके बारे में,
ना मरा वह लटका फाँसी पर सात बार।
देवी माँ से तब विनती करके बंधु सिंह,
अमर हुआ ख़ुशी-ख़ुशी आठवीं बार।।

बेगम हज़रत महल

अवध की बेगम कहलाती थीं वो,
वाज़िद अली शाह की दूसरी पत्नी।
नाम था उनका बेगम हज़रत महल,
शौर्य और साहस की मिशाल थीं वो।।

पेशे से तवायफ़ थीं वो उस समय,
माँ बाप ने उनको बेचा था उनको।
अवध के नवाब की रखैल थी वो,
वहीं बेगम का दर्जा मिला उनको।।

अंग्रेज़ों की हुकूमत से की थी बग़ावत,
लखनऊ पर क़ब्ज़ा कर बनी थी आफ़त।
हज़रत महल को हटना पड़ गया पीछे,
नाना साहेब ने कर दी अंग्रेजों को आफ़त।।

सन १८५७ की क्रान्ति से उन्होंने जब,
अंग्रेजों से जमकर युद्ध किया तब।
रानी लक्ष्मीबाई संग तब बेगम ने,
अंग्रेज़ों की ईंट से ईंट बजा दी तब।।

ऐसा था उनका अद्भुत बल और दल,
अंग्रेज़ों का टूट जाता था मनोबल।
अटूट मन से लड़ीं आख़िरी दम तक,
अमर हो गयीं लड़ते आख़िरी दम तक।।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर

लेखक,अनुवादक,
उद्यमी,समाज सुधारक।
नाम उनका ईश्वर चंद्र विद्यासागर,
बंगाल-पुनर्जागरण के कारक।।

संस्कृत भाषा,दर्शन के पंडित,
कलकत्ता के बालिका विद्यालय की नींव।
बाल विवाह के कट्टर विरोधी,
विधवा-पुनर्विवाह के संग थे पंडित।।

फ़ोर्ट विलियम कालेज में बने पंडित,
बालिका शिक्षा को किया प्रोत्साहित।
शिक्षा प्रणाली में बदलाव के मुखिया,
नंदन कानन में निवास करते थे पंडित।।

साधारण जीवन जीने वाले पंडित,
समाज को समर्पित थे पंडित।
समाज सुधारक,नीतिवान थे पंडित,
समाज को एक आइना बन गए पंडित।।

महात्मा गांधी

हम सबके थे प्यारे बापू,
सारे जग से न्यारे बापू।
बच्चे कहते उनको बापू,
सत्य, अहिंसावादी बापू।।

मोहनदास करमचंद गांधी,
पत्नी थीं कस्तूरबा गांधी।
०२ अक्टूबर को जन्मे गांधी,
पोरबंदर में जन्मे थे गांधी।।

दक्षिण अफ़्रीका में वकालत की,
वहाँ रंगभेद नीति की बुराई थी।
रंगभेद के विरुद्ध लड़ाई की,
भारत आ आज़ादी की लड़ाई की।।

३० जनवरी सन १९४७ को जब,
दिल्ली के बिरला मंदिर में तब।
नाथूराम ने गोली मार दी उनको,
खत्म हुआ भारत का लाल तब।।

शहीद हुए हैं वो मगर फिर भी,
दिल में सबके बापू बसते हैं।
आजादी बापू की देन थी,
जिस पर हम गर्व करते हैं।।

सुभाष चंद्र बोस

कायस्थ परिवार में जन्मा,
एक विलक्षण बालक सा।
नाम था सुभाष चंद्र बोस,
पिता जानकीनाथ बोस।।

देशभक्त और अटूट साहस,
अंग्रेज़ों से लड़ने का साहस।
आजाद हिंद फ़ौज संस्थापक,
जय हिंद नारा का प्रचारक।।

अकेले दम से लड़ा अंग्रेज़ों से,
साम, दाम, दंड, भेद सब प्रयास से।
जापान के साथ मिलकर उसने,
संगठित कर ली सेना मज़बूती से।।

जमकर टक्कर ली अंग्रेज़ों से,
स्वतंत्र भारत के सपने को लेकर।
कर दी अपनी जान न्योछावर,
हो गया शहीद गोली मारकर।।

तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा,
कहता था सबसे वो आज़ादी को।
हो गया अमर जान देकर अपनी वो,
भारत माँ का वीर सपूत था जो।।

लाल बहादुर शास्त्री

नाम लाल बहादुर शास्त्री,
जन्म स्थान मुग़लसराय।
संस्कृत भाषा में स्नातक कर,
शास्त्री जी नाम हो जाय।।

भारत के दूसरे प्रधानमंत्री,
उत्तर प्रदेश में भी रहे मंत्री।
गोविंद वल्लभपंत के निर्देशन में,
पुलिस और परिवहन मंत्रालय के मंत्री।।

गांधीवादी विचारधारा के प्रमुख,
असहयोग और स्वदेशी आंदोलन प्रमुख।
पाकयुद्ध संधि जब की ताशकंद में,
जीत लिया जब भारत-पाक युद्ध प्रमुख।।

मृत्यु हुई हार्ट अटैक से,
या हो गयी ज़हर देने से।
राज छिपा रह गया मृत्यु का,
हो गये अमर,चल बसे दुनिया से।।

श्रीनिवास रामानुजम(महान गणतिज्ञ)

अपनी बुद्धि और कौशल से,
विश्व इतिहास के पन्नों में।
नाम रामानुजम अमर रहेगा,
विश्व गणित के पन्नों में।।

3000 से अधिक प्रमेय में,
अद्भुत गाथा को लिख डाला।
गणित विषय की सोच को यूँ,
आसान सूत्रों में पिरो डाला।।

तीन वर्ष तक ना बोला कुछ भी,
पर ऐसे बोले विश्व हुआ अचंभित ही।
ऐसी प्रतिभा को मान-सम्मान दिया,
थे प्रोफेसर हार्डी जिसने ये काम किया।।

अल्प आयु में ही अनेकों शोध किए,
तब जाकर सपूत ने प्राण त्याग किए।
विश्व को ऐसी क्षति, ना पूरी हो पाएगी,
इस सपूत की गाथा यूँही गायी जाएगी।।

डा०विश्वेश्वरैया

महान अभियंता विश्वेश्वरैया,
लोहा माने उनका सारी दुनिया।
कर्नाटक के कोलार जिले में जन्मा,
माँ भारती का लाल विश्वेश्वरैया।।

आरम्भिक शिक्षा चिकबल्लापुर में,
पूना से स्नातक अभियांत्रिकी में।
डाक्टरेट उपाधि मिली बम्बई से,
सर की उपाधि मिली अंग्रेजों से।।

एक बार की बात है जब वह,
करते यात्रा रेलगाड़ी में वह।
हुआ अचम्भा यह जानकर तब,
खींच चैन ली गाड़ी की उन्होंने जब।।

आ पहुँचा तब रेल अधिकारी,
किसने खींची चैन रेलगाड़ी की।
बता अचंभित हुए सभी जब,
पटरी टूटी है आगे कुछ दूरी की।।

एक बार जब वह इटली में थे,
हैदराबाद निज़ाम मुश्किल में थे।
तुरंत बुलाया उनको वहाँ जब,
निकाल दिया मुश्किल का हल तब।।

बांधा नदी के दोनों ओर बांध तब,
नदी का पानी ना मुश्किल बना अब।
ऐसे थे यह भारत के लाल विश्वेश्वरैया,
सौ बरसों तक जीवन में की सेवा तब।।

जवाहर लाल नेहरू

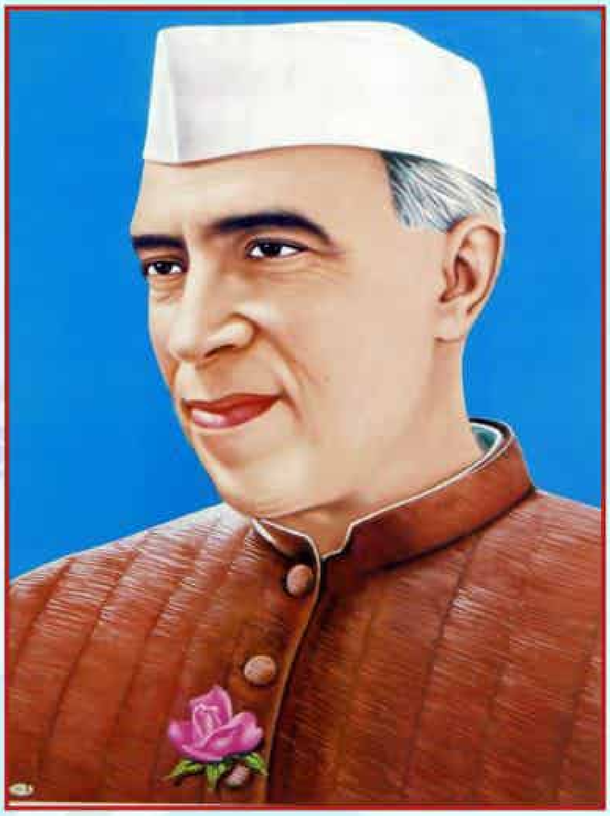

१४ नवम्बर को जन्म हुआ,
जवाहर लाल नेहरु नाम हुआ।
कश्मीर मूल में जन्म हुआ,
पंडित नेहरु उनका नाम हुआ।।

बच्चे उनको चाचा नेहरु कहते,
मोतीलाल नेहरू उनके पिता थे।
कमला नेहरु उनकी पत्नी थीं,
बड़े कालेजों में पढ़ने जाते थे।।

स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री,
बच्चों को अत्यंत प्यार थे करते।
अपना जन्मदिन किया समर्पित,
बाल दिवस जिसे कहकर पुकारते।।

गाँधीजी की विचारधारा से प्रेरित,
नेहरु जी थे तन-मन से समर्पित।
लेखन को भी थे तन-मन से समर्पित,
डिस्कवरी आफ इण्डिया थी चर्चित।।

डा०राम मनोहर लोहिया

२३ मार्च १९१० में जन्म लिया,
अयोध्या जिले के अकबरपुर में।
नाम रखा गया राम मनोहर लोहिया,
पिता थे उनके हीरालाल लोहिया।।

गाँधीजी के पिता अनुयायी थे,
जब भी मिला करते थे उनसे।
साथ में जाते राम मनोहर थे,
प्रभावित हुए वह भी जब उनसे।।

विदेशी वस्तु के कट्टर विरोधी,
अंग्रेज़ों के थे वह कट्टर विरोधी।
अखिल बंग भारतीय परिषद में,
अध्यक्ष पद पर आसीन मनोहर जी।।

अग्रवाल समाज कोष में पढ़ाई,
साइमन कमीशन के विरुद्ध लड़ाई।
आजादी को अपनी जान लगाई,
स्वाधीनता संग्राम को नयी पहचान दिलाई।।

जेल हुई कई बार उन्हें जब,
ना टूटा मनोबल फिर भी तब।
अंग्रेजों का डटकर सामना तब,
५७ वर्ष में परलोकी हुए तब।।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय

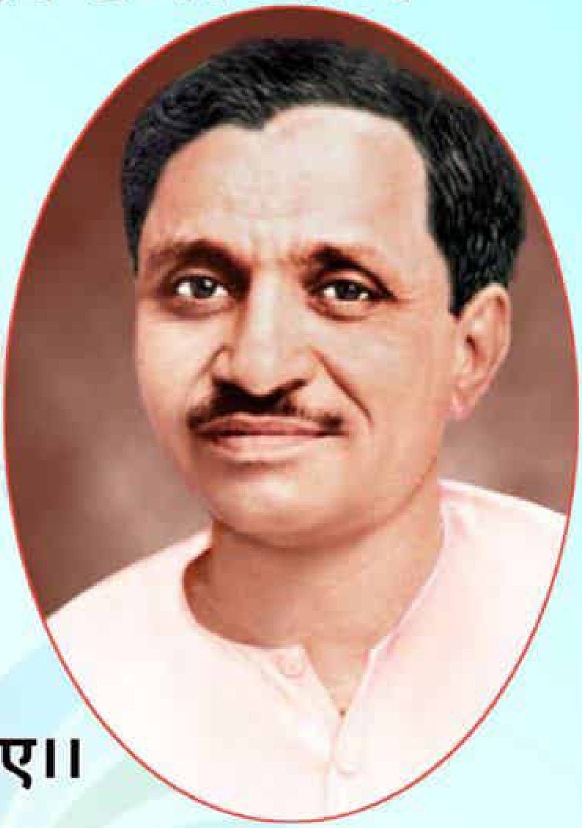

जन्म हुआ मथुरा जिले में,
नगला चंद्रभान ग्राम में।
पिता भगवती प्रसाद उपाध्याय,
नौकरी करते थे वहाँ रेल में।।

दीनदयाल दो भाई थे दोनों,
रहते नाना के घर थे दोनों।
बचपन में ही पिता गुजर गए,
१९ वर्ष की उम्र में अकेले रह गए।।

भारतीय जनसंघ के महामंत्री थे,
कालीकट अधिवेशन में अध्यक्ष थे।
राजनीति के दूरदर्शी नेता कहे जाते,
राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के मुखिया थे।।

मुग़लसराय स्टेशन पर जब उनकी,
लावारिस लाश मिली सबको जब।
पूरा देश रो उठा इस गम से जब,
शोक की लहर देश में फैली तब।।